भगवान महावीर विश्वविद्यालय, सूरत में माननीय अध्यक्ष जी का सम्बोधन

भगवान महावीर विश्वविद्यालय के इस कैम्पस में आज आप सबके बीच आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। भगवान महावीर के नाम का विश्वविद्यालय होने से विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति, संस्कार और सुसंस्कृत विचार हैं। भगवान महावीर के विचार, सिद्धांत और मानव दर्शन को दिए गए उनके सिद्धांत व विचार आज भी दुनिया के अंदर मानवीय दृष्टिकोण में परिवर्तन तथा मानवीय दृष्टिकोण को दिशा देने का काम कर रहे हैं।

जिस विश्वविद्यालय के कैम्पस का नाम भगवान महावीर के नाम पर हो, वहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों को विशेष सौभाग्य प्राप्त है, क्योंकि उनको इस विश्वविद्यालय में अध्ययन, रिसर्च और उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। इस विश्वविद्यालय के अध्यक्ष श्री संजय जैन जी, ट्रस्टी अनिल जैन जी, सीनियर एडवोकेट प्रवेश खन्ना जी, निर्मल शर्मा जी और यहां पर आए सभी अतिथिगण, विद्यार्थी एवं साथियो,

आज मुझे खुशी है कि देश के अंदर आने वाले समय में हम इन विश्वविद्यालयों के माध्यम से देश और विश्व की चुनौतियों का समाधान इन कैम्पस से निकालना चाहते हैं। आज वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अंदर हमारी जो शिक्षा नीति है, हमारी पॉलिसी है, उसके अंदर बच्चों व नौजवानों में बौद्धिक क्षमता का विकास तो करना ही है, लेकिन उसके साथ-साथ बहुआयामी विकास भी करना है।

दुनिया के अंदर जो परिवर्तन हुए हैं, विज्ञान, टेक्नोलॉजी और उसके माध्यम से चुनौतियों का समाधान भी हम आने वाले समय में इन विश्वविद्यालयों के कैम्पस से निकाले। यहां लॉ के विद्यार्थी भी बैठे हुए हैं। देश के अंदर लॉ का विद्यार्थी किस तरीके से भारत के लोकतंत्र के अंदर, भारत की सरकार के अंदर, लोकतांत्रिक संस्थाओं के अंदर, चुनी हुई सरकार में अपनी सक्रिय सहभागिता निभाए। राज्यों व केन्द्र में बेहतर कानून बने और उस कानून बनाने के अंदर हमारे नौजवानों की सक्रिय भागीदारी रहे।

जब भारत आज़ाद हुआ था तो हमने संसदीय लोकतंत्र की प्रणाली को अपनाया। दुनिया के अंदर आज भी शासन चलाने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति संसदीय लोकतंत्र है।

दुनिया के अंदर जिन देशों ने भी आज़ादी प्राप्त की है या जहां पर लोकतंत्र नहीं है, वहां भी इस बात की प्रतिस्पर्धा है कि हमारा देश लोकतांत्रिक दिखे और लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं का पालन करने का प्रयास करे। उसमें लॉ के विद्यार्थियों का बहुत बड़ा योगदान है। लिटिगेशन बढ़ गए हैं, कानून का शासन हो और शासन कानून की परवाह करे। सबको समानता, न्याय और अधिकार मिले। इसके लिए कानून के विद्यार्थियों का बहुत बड़ा योगदान है। मैं तो लोकतंत्र की सबसे बड़ी संस्था का अध्यक्ष हूं, उस नाते मैं समझता हूं कि जब हम कानून बनाते हैं तो कानून बनते समय संसद में चर्चा होती है, संवाद होता है, उस चर्चा और संवाद के अंदर जनता की भागीदारी रहे।

लोकतांत्रिक संस्थाओं में नौजवानों की जितनी सक्रिय भागीदारी रहेगी, उतना ही शासन और प्रशासन में पारदर्शिता व जवाबदेही आएगी। इसके लिए लॉ के विद्यार्थियों का बहुत बड़ा योगदान इस देश के अंदर लोकतांत्रिक व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही के लिए बहुत आवश्यक है।

जैसा मैंने इनोवेशन और रिसर्च के बारे में कहा, दुनिया के जितने भी विकसित देश हैं, उन विकसित देशों ने बौद्धिक क्षमता के माध्यम से महाविद्यालय चलाये और संचालित किए।

लेकिन उन्होंने इसके साथ-साथ अपने विश्वविद्यालयों के अंदर रिसर्च, विज्ञान, टेक्नोलॉजी, नए नवाचार आदि को भी प्राथमिकता दी।

उन विश्वविद्यालयों के अंदर नए रिसर्च और नई टेक्नोलॉजी के कारण उस देश की समस्या, चुनौतियां, समाज और जीवन के अंदर आने वाली चुनौतियों का समाधान उन विश्वविद्यालयों से निकला।

चाहे इंडस्ट्री सेक्टर हो, सर्विस सेक्टर हो, टेक्नोलॉजी का सेक्टर हो, चिकित्सा का क्षेत्र हो, हर सेक्टर के अंदर उन विश्वविद्यालयों के अंदर बच्चों की बौद्धिक क्षमता के अध्ययन के साथ-साथ उनमें इनोवेशन की क्षमता का भी डेवलपमेंट किया जाए। उन्होंने रिसर्च और इनोवेशन बहुत पहले शुरू किया था, यह बात सही है।

मैं भी विश्व के कई विश्वविद्यालयों में गया हूं। मेरी कोशिश रहती है कि मैं जब कभी बाहर जाता हूं तो किसी न किसी विश्वविद्यालय के कैम्पस में जाऊं। वहां के विद्यार्थी और नौजवान किस तरह बदलती परिस्थितियों में काम कर रहे हैं। मैं आज यह गर्व के साथ कह सकता हूं कि दुनिया के अंदर भारत के नौजवानों में जो बौद्धिक क्षमता है, उनकी ऊर्जा है, उनमें इनोवेशन करने की जो असीमित शक्ति है।

टेक्नोलॉजी के अंदर जिस तरीके से हमारा नौजवान तेजी से आगे बढ़ रहा है, नई सोच, नए विचार, नए तार्किक क्षमता के कारण आज दुनिया के अधिकतम विकसित देशों के अंदर भारत के नौजवानों का योगदान है।

आज आप दुनिया के किसी भी बड़े देश में चले जाओ, उस बड़े देश में आप देखेंगे कि वहां आईटी के अंदर भारत के नौजवान हैं। मेडिकल के क्षेत्र में जो डॉक्टर हैं, वे भारत के नौजवान हैं। विज्ञान के अंदर भारत के नौजवान हैं, चार्टर्ड एकाउंटेंट के क्षेत्र में भारत के नौजवान हैं। दुनिया में जितनी भी बड़ी कंपनियां हैं, जो प्रोफेशनल तरीके से चल रही हैं, जिस कंपनी को आर्थिक-सामाजिक रूप से परिवर्तन करने का काम किया और उसमें जो सीईओ हैं, वह भारत का नौजवान है।

इसलिए यह मानना पड़ेगा कि हमारे नौजवानों में बौद्धिक क्षमता पर्याप्त है। उनमें असीमित ऊर्जा है, साहस है, आत्मविश्वास है और सबसे बड़ी बात है कि जिस तरीके से इस विश्वविद्यालय का नाम है, उसी तरह से आध्यात्मिक और सुसंस्कृत विद्यार्थी हैं। वहां बौद्धिक संसाधन होने के बाद भी वे भौतिक युग की तरफ न बढ़ते हुए आध्यात्मिक युग की तरफ ही हैं, जिसके कारण वे न तनाव में है और न अवसाद में है।

बाहर शिक्षा बढ़ी है, इनोवेशन बढ़ा है और उसके साथ-साथ भौतिक वस्तुओं के उपयोग की बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के कारण कहीं न कहीं वहां के विद्यालयों में तनाव है, अवसाद है। उस तनाव और अवसाद के कारण शांति और आध्यात्मिक शांति का कोई रास्ता उनके पास नहीं है।

यह भारत की धरती का रंग है, जहां पर हम कह सकते हैं कि हमारी प्राचीनतम व्यवस्था के अंदर भी हमारी गुरुकुल शिक्षा पद्धति हो, चाहे आज की आधुनिक शिक्षा पद्धति हो, उसके अंदर हम बौद्धिक क्षमता का डेवलपमेंट करने का काम तो करते ही हैं, आने वाले समय में नए इनोवेशन और नए रिसर्च के लिए संसाधन भी उपलब्ध करवा रहे हैं। उसके साथ-साथ मानवीय दृष्टि से जीना, संवदेनशीलता के साथ जीना, ताकि आध्यात्मिक और धर्म अपना-अपना धर्म लें, जो जिसका धर्म है, उस धर्म के अंदर भी कहीं न कहीं संवेदना होती है, मानवता होती है, उसके कारण हमारा नौजवान श्रेष्ठतम है।

इसीलिए मैं यहां के अध्यक्ष, ट्रस्टी, सभी पदाधिकारियों को बहुत-बहुत धन्यवाद दूंगा कि जैसा नाम वैसी शिक्षा, वैसे विचार आपने यहां पर शुरू किए हैं। जहां तक लोकतंत्र के अंदर नौजवानों की सक्रिय भागीदारी का

सवाल है, अगर देश में लोकतंत्र को सशक्त बनाना है, मजबूत बनाना है, राजनीति में गतिशीलता बनानी है, राजनीति में शुद्धता लानी है, तो भारत के नौजवानों को सक्रिय भागीदारी निभानी होगी। क्योंकि भारत के नौजवान में ही अथाह शक्ति है, साहस है, ऊर्जा है और आत्मविश्वास है। अगर कुछ करने की शक्ति और सामर्थ्य है तो वह भारत के नौजवान में है।

इसलिए मैं हमेशा कहता हूं कि भारत के नौजवानों को शासन-प्रशासन में पारदर्शिता, जवाबदेही सुशासन लाना है तो हमें कहीं न कहीं राजनीति के अंदर सक्रिय भागीदारी जरूर निभानी होगी।

राजनीति शब्द के अंदर कहीं न कहीं लोग यह समझने लगे थे कि राजनीति में चापलूस, कुटिलता, धोखेबाजी आदि शब्दों का प्रचलन लम्बे समय तक भारत की राजनीति में चला। लेकिन मेरा मानना है कि राजनीति के माध्यम से ही देश व विदेश की नीतियां और कार्यक्रमों को श्रेष्ठ बनाने में राजनीति के अलावा, संसदीय लोकतंत्र के अलावा कोई विकल्प नहीं है। जब संसदीय लोकतंत्र के अलावा कोई विकल्प नहीं है, शासन की सर्वश्रेष्ठ पद्धति यही है और जिस समय हमें आज़ादी मिली थी, उस समय भी संविधान बनाने वालों ने सारी की सारी शक्तियां जनता को दी थीं। इसलिए दुनिया के कई देशों के अंदर मतदाता कहीं पुरुष होते थे, तो कहीं महिलाएं नहीं होती थीं, कहीं मतदाताओं के अंदर विभाजन किया जाता था।

लेकिन भारत एक ऐसा देश था, जिसने आज़ादी के बाद जब संविधान बनाया तो सबको समान अधिकार दिए। यह हमारी ताकत है। जनता का शासन और जनता द्वारा संचालित है।

यह हमारी सामूहिक ताकत है कि 17 आम चुनावों के बाद भी जिस तरीके से सहज सत्ता का स्थानांतरण हुआ, यह हमारे लोकतंत्र की श्रेष्ठता की ताकत है। चाहे राज्यों के विधान सभाओं के चुनाव हो या संसद के चुनाव हो, आपने देखा होगा कि इतने बड़े लोकतंत्र के अंदर 90 करोड़ मतदाता है।

जब मैं विश्व के कई देशों में जाता हूं तो वहां पूछता हूं कि आबादी कितनी है तो कोई कहता है कि आबादी दस लाख है, कोई कहता है कि पांच लाख है, कोई कहता है कि 20 लाख है। यदि कोई बड़ा देश हो तो वहां 20 करोड़ या 25 करोड़ की आबादी है। जब उनको पता चलता है कि 90 करोड़ मतदाता भारत में मतदान करते हैं

और आज तक हमारे यहां मतदान के अंदर पॉलिटिकल सवाल उठा दे, लेकिन हमारे चुनाव की जो पारदर्शिता है, वह पारदर्शिता दुनिया के अंदर लोकतंत्र को एक मार्ग दिखाने की हमारी दिशा है।

इतने बड़े लोकतंत्र के अंदर जहां पर पंचायत से लेकर दिल्ली की संसद तक हमारे चुने हुए प्रतिनिधि हैं, जनता की अपेक्षाएं, आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हमने ग्राम पंचायत, नगरपालिका, नगर निगम, विधान सभा और लोक सभा की व्यवस्था की है।

हर प्लेटफार्म पर हर व्यक्ति के अधिकार रेखांकित किए हैं, अधिकार निश्चित किए गए हैं और लोकतांत्रिक संस्थाओं को जवादेही बनाने के प्रयास किए हैं।

अगर लोकतांत्रिक संस्थाओं को जवाबदेही बनाना है तो मेरे भारत के नौजवानों को उसमें सक्रिय भागीदारी निभानी पड़ेगी। सुशासन लाने के लिए, अच्छा शासन लाने के लिए भारत के नौजवान की जवाबदेही से काम करने की भागीदारी बढ़े और एक अच्छा शासन, पारदर्शिता का शासन लाए, जो जनता की जवाबदेही से काम कर सके। हमने इस 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा के अंदर, भारत की आज़ादी के बाद इन 75 सालों में जो भी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन किए, हमने अपनी लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से किए, लोकतंत्र के माध्यम से किए।

जब देश आज़ाद हुआ था तो हम 18 प्रतिशत साक्षर थे। आज हम 80 प्रतिशत से ज्यादा साक्षर हैं। जब आप आर्थिक परिवर्तनों को देखेंगे, तो आप देखेंगे कि पहला बजट 175 करोड़ रुपये का था और आज 40 लाख करोड़ रुपये का बजट है। यह हमने भारत के अंदर आर्थिक परिवर्तन देखा है। हमने जिस तरीके से 75 वर्ष की यात्रा में जो आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन किए, हमें खुशी है कि आने वाले दशक के अंदर भारत इस लोकतंत्र के माध्यम से दुनिया के अंदर हर क्षेत्र में श्रेष्ठता हासिल करेगा।

इसलिए हमें खुशी है कि हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज देश इस 25 साल की लोकतंत्र की यात्रा, जो आगे शुरू होनी है, जिन बच्चों या नौजवानों की उम्र अभी 25 साल है, जब वे 50 साल होने पर भारत के सपने को देखेंगे तो एक विकसित राष्ट्र के रूप में भारत को देखेंगे। सामाजिक-आर्थिक हर क्षेत्र में दुनिया के अंदर सर्वश्रेष्ठ भारत होगा।

आज हमारी ताकत इतनी है कि आप किसी भी सेक्टर में चले जाएं, आज हमारे नौजवानों ने इसी बौद्धिक क्षमता, इनोवेशन और नई सोच के कारण 70 हजार से ज्यादा स्टार्ट अप्स शुरू किए हैं। आने वाले समय में विश्वविद्यालय नए स्टार्ट अप को निकालेगा। 70 हजार से ज्यादा स्टार्ट अप्स हैं और इन 70 हजार से ज्यादा स्टार्ट अप्स के अंदर आप जब नौजवानों से मिलेंगे तो आपको लगेगा कि दुनिया की हर चुनौती का, आज की चुनौती, भविष्य की चुनौती, हर चुनौती का समाधान, हर आपदा-संकट का समाधान भारत का नौजवान दुनिया को देगा। यह हमारी ताकत और सामर्थ्य शक्ति है। इसलिए हम कहते हैं कि जब आज़ादी के 100 साल होंगे तो भारत विकसित राष्ट्र होगा।

हम अपनी विरासत को भी याद रखेंगे और आधुनिकता की ओर भी बढ़ेंगे। यह हमारा संकल्प है। क्योंकि विरासत हमें नई प्रेरणा देती है, नई शक्ति देती है और आधुनिकता हमें नई सोच की दिशा की ओर बढ़ाती है। इन दोनों को लेकर भारत एक नई दिशा की ओर बढ़ रहा है।

मुझे आशा है कि आज मैं सामने जिन नौजवान विद्यार्थियों को देख रहा हूं, जो सपने हमारे नौजवान विद्यार्थी देख रहे हैं, जो आत्मविश्वास है, ऊर्जा है, असीमित सोचने शक्ति है, नए विचार, नई सोच, नए अनुसंधान की जो ताकत है, आपकी इन्हीं ताकत और सामर्थ्य शक्ति के कारण भारत आने वाले समय में विकसित राष्ट्र बनेगा। दुनिया के अंदर हर क्षेत्र में भारत नेतृत्व करेगा और यह जिम्मेदारी मेरे नौजवान विद्यार्थियों की है।

मैं पुन: भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के सभी संचालकों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। मेरे पास संजय जी आए थे, तो मैंने कहा था कि मैं आपके विश्वविद्यालय में आऊंगा। उन्होंने पहले कई बार आग्रह किया था। लेकिन संयोग से मैं आज आपके विश्वविद्यालय में आया हूं और मुझे आकर बहुत खुशी हुई है।

आपने जिस तरीके से इस कैम्पस के अंदर शिक्षा, बौद्धिक क्षमता, नया रिसर्च, नया इनोवेशन आदि सभी तरीके से शिक्षण देने का काम किया है, इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।